THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-02 | July-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.37

# वैदिक वांग्मय में पारिस्थितिक-दर्शन: पाठ्य विश्लेषण एवं समकालीन प्रासंगिकता

**डॉ0 श्रवण कुमार शुक्ल[1], डॉ0 भूपेश कुमार मिश्र[2]**

[1]असि0 प्रो0 भूगोल विभाग, आ0 न0 देव किसान पी0जी0 कालेज बभनान गोण्डा

[2]असि0 प्रो0, पी0 जी0 भूगोल विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय छपरा (सारण), बिहार

[1]Email.ID: sharvan.shukla70@gmail.com, [2]Email.ID: drmishrabhupesh@gmail.com

**सारांश:**

*समकालीन वैश्विक पारिस्थितकीय संकट मानव केन्द्रित शोषण से हटकर पर्यावरण सह अस्तित्व की ओर बढ़ने की मांग करता है। आधुनिक पर्यावरणीय ढांचा राजनीतिक और तकनीकी समाधानों पर निर्भर है। इसमें स्थायी व्यावहारिक परिवर्तन के लिए नैतिक और दार्शनिक आधार की कमी है। प्रस्तुत शोध पत्र प्राचीन भारतीय वैदिक साहित्य (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अर्थववेद)में निहित पर्यावरणीय चेतना के वैचारिक ढाचे का अन्वेषण करता है। सम्प्रति बढ़ती जनसंख्या, बढ़ता नगरीकरण, औद्योगीकरण, भोग-विलास वादी मानव प्रवृत्ति, विभिन्न प्रकार के प्रदूषण, घटते वन, एवं वन्यजीव, सिकुड़ता कृषि क्षेत्र, जल एवं ऊर्जा जैसे संसाधनों का गहराता संकट जैसे भयावह समस्याओं के समाधान में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अक्षम हो रहे हैं। जबकि वैदिक ग्रन्थों में पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण निवारण और पर्यावरण चेतना का जो संदेश(प्राचीन भारतीय मनीषियों ने प्रकृति को केवल उपभोग की वस्तु न मानकर उसे दैवीय स्वरूप प्रदान किया था) है वह आज के संदर्भ में नितांत प्रासंगिक है, क्योंकि पृथ्वी, जल, वायु, वनस्पति और अंतरिक्ष आदि को देवता मानकर वैदिक दृष्टिकोण की विवेचना वर्तमान वैश्विक जलवायु संकट को कम करने में सहायक या मार्गदर्शक सिद्धान्त प्रस्तुत करता है। गुणात्मक पाठ्य विश्लेषण पद्धति का उपयोग करते हुए यह अध्ययन प्रकृति और मनुष्य के मध्य सहजीवी सम्बन्ध की व्याख्या करता है। इस प्रकार के अध्ययन से आधुनिक पर्यावरणीय शिक्षा और नीतिगत ढाँचे में वैदिक पारिस्थितिक दर्शन को एकीकृत करके वैश्विक सतत विकास के प्रति एक कर्तव्य केन्द्रित दृष्टिकोण विकसित किया जा सकता है।*

**मुख्य शब्द:** वैदिक काल, पर्यावरणीय चेतना, प्रकृति संरक्षण, सतत विकास, पंच महाभूत

## प्रस्तावना

वर्तमान युग पारिस्थितिक क्षरण का युग है जिसका मुख्य कारण एक अनुदार मानव केन्द्रित प्रतिमान है जो पृथ्वी को उपभोग्य संसाधन मानता है। क्योटो प्रोटोकाल से लेकर पेरिस समझौते तक सभी समझौते तमाम प्रयास के बावजूद अपना लक्ष्य पाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं क्योंकि पर्यावरण संरक्षण को एक आन्तरिक नैतिक कर्तव्य न मानकर बाह्य कानूनी अनुपालन माना गया है। इसी वैचारिक शून्यता को मिटाने के लिए पर्यावरण दार्शनिक

तेजी से स्वदेशी(पर्यावरण अनुकूलित) ज्ञान परम्परा की ओर रुख कर रहे हैं। वैदिक संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है जिसकी नींव ही प्रकृति और मानव के अटूट सम्बन्ध पर टिकी है। पर्यावरण शब्द "परि" और "आवरण" से मिलकर बना है जिसका अर्थ है हमारे चारों ओर का घेरा। वेदों में पर्यावरण के लिए "ऋत" (Natural Law)शब्द का प्रयोग हुआ है जो ब्रह्मांड की नैतिकता और भौतिक व्यवस्था को दर्शाता है। वेद और उपनिषद जैसे पवित्र ग्रन्थ हिन्दू धर्म के आधार हैं। इनमें हर जगह प्रकृति से विरासत में मिली सभी वस्तुओं का जीवन से गहरा जुड़ाव मिलता है तथा सभी को अत्यन्त पवित्र मानकर लोग इनकी पूजा अर्चना करते हैं। पहले वैदिक ग्रन्थों को पाठ्यक्रम में रखकर बच्चों को पर्यावरण से जोड़ा जाता था शिक्षार्थी वेद मन्त्रों को कंठस्थ करके उन्हें अपने जीवन में उतारते थे। इनसे मिली सीख आज के समय में,(जब हम अपनी नैतिक मर्यादा को भूलकर आधुनिक बनने की होड़ में लगे हुए हैं साथ ही अपना सारा घ्यान मोबाइल में रील देखने/बनाने आदि में लगाकर कीमती समय बर्वाद कर रहे हैं)और भी अधिक प्रासंगिक और व्यावहारिक है।

**शोध अध्ययन का उद्देश्य**

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य निम्नलिखित है -

1. वैदिक काल के प्रमुख ग्रन्थों में पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धी मन्त्रों की अध्ययन करना।
2. पर्यावरण प्रदूषण और उनके निवारण सम्बन्धी उपाय की पहचान।
3. पर्यावरण संरक्षण हेतु पर्यावरणीय तत्वों के देखरेख हेतु दी गयी प्रेरणा का अध्ययन करना।
4. वैदिक साहित्य में प्राप्त ज्ञान के आधार पर आधुनिक युग में पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना को समाज सेवियों,शिक्षाविदों, विद्यार्थियों एवं आम जनमानस तक पहुँचाना।

**शोध प्रविधि**

प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्णनात्मक है जिसमें वेद पुराणों में उल्लिखित मन्त्रों और सूक्तियों का उपयोग लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करने हेतु किया गया है। साथ ही समकालीन महत्व को निर्धारित करने के लिए निष्कर्षों की तुलना संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य (SDGs) जैसे आधुनिक मानकों के साथ की गयी है।

**पर्यावरण संरक्षण और वैदिक साहित्य**

पर्यावरण संरक्षण का अर्थ है प्राकृतिक संसाधनों -वायु, जल, भूमि और वनों को प्रदूषण और विनाश से बचाना। पारिस्थैतिक संतुलन बनाये रखने, जैव विविधता को बचाये रखने तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ रहने योग्य पृथ्वी बची रहे, के लिए पर्यावरण संरक्षण जरूरी है। सतत विकास के लिए यह एक महत्वपूर्ण कदम है। सम्प्रति जब सम्पूर्ण ग्लोब पर स्वच्छ हवा, भोजन तथा पानी का संकट है बढ़ते प्रदूषण से लोगों में अनेक बीमारियों ने अपना घर बना लिया है, जलवायु परिवर्तन के कारण ग्लोबल वार्मिंग का खतरा बढ़ रहा है, जैव विविधता विनष्ट हो रही है, पानी, वन और खनिज जो सीमित मात्रा में हैं के दीर्घ कालिक उपयोग के लिए पर्यावरण संरक्षण अति आवश्यक है। वैदिक साहित्य में प्रकृति को केवल संसाधन न मानकर एक जीवन्त सत्ता के रूप में देखा गया है। ऋषि मुनियों ने तो प्रकृति के प्रत्येक तत्व यथा-पृथ्वी, वायु, अग्नि, आकाश, पर्वत, नदी, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे आदि को देवता के रूप में प्रतिष्ठित किया है, ताकि उनका संरक्षण हो सके।

वैदिक साहित्य चार वेदों-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अर्थववेद आदि में विभक्त है। इनमें संहितायें, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद शामिल हैं। ऋग्वेद में प्रकृति के विविध तत्वों यथा सूर्य, अग्नि, वायु, जल, मृदा आदि की देवता मानकर स्तुति की गयी है ताकि भूल से भी इनका शोषण न हो। यजुर्वेद में यज्ञों के माध्यम से प्रकृति के मध्य संतुलन बनाये रखने पर बल दिया गया है। सामवेद में संगीत के माध्यम से प्रकृति से साथ संतुलन या सामन्जस्य बनाये रखने की बात कही गयी है। वहीं, अर्थववेद में औषधीय पौधों की पहचान और पृथ्वी की महत्ता का वर्णन है।

**वैदिक साहित्य में पर्यावरणीय चेतना**

पर्यावरण चेतना आज के समय की अत्यन्त महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गई है। बढ़ते औद्योगीकरण, नगरीकरण, और जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रकृति पर अत्यधिक दबाव बढ़ रहा है। जंगलों की कटाई, जल, वायु, ठोस अपशिष्ट प्रदूषण तथा जलवायु परिवर्तन प्रभृति समस्यायें हमारे अस्तित्व के लिए खतरा बनती जा रही हैं। ऐसे में पर्यावरण के प्रति जागरूक होना और दूसरों को जागरूक करना हम सभी का कर्तव्य है। पर्यावरण चेतना का अर्थ है प्रकृति के महत्व को समझना और उसके संरक्षण के लिए अपनी जिम्मेदारी निर्वहन करना। इस प्रकार पर्यावरण के प्रति सचेत होना, पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित विविध कार्यक्रमों में सक्रिय रहना पर्यावरण चेतना है।

**पृथ्वी के प्रति वैदिक ग्रन्थों का दृष्टिकोण**

अर्थववेद में पर्यावरण के प्रति जो चेतना मिलती है वह आधुनिक इकोलॉजी से कहीं अधिक गहरी और अध्यात्मिक है। उसमें प्रकृति को उपभोग की वस्तु न मानकर एक जीवन्त इकाई माना गया है। अर्थववेद का 12 वां कांड भूमि सूक्त पर्यावरण चेतना का सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इसमें 63 मन्त्र हैं जो मनुष्य और प्रकृति के अटूट सम्बन्ध को दर्शाते हैं। इस ग्रन्थ में भूमि को मातृवत सम्मान देते हुए ऋषि कहता है कि **"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"**[1] अर्थात् पृथ्वी मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ (भावः इसमें पृथ्वी और मानव का सम्बन्ध माता-पुत्र जैसा बताया गया है ताकि संरक्षण और सम्मान का भाव पैदा हो सके)। **"यस्याम् समुद्र उत सिन्धवो आपो यस्यामन्नं कृषयः सम्बभूवुः"**[2] अर्थात् जिस पृथ्वी में समुद्र, नदियां और अन्न पैदा होते हैं उसका संरक्षण आवश्यक है। **"विश्वम्भरा वसुधा नि प्रतिष्ठा"**[3] अर्थात् पृथ्वी सबको धारण करने वाली है, इसलिए मनुष्य को उसका संतुलन बनाये रखना चाहिए। **"यत्ते भूमे विखनामि तत् त्वं रोहतु"**[4] अर्थात् हे पृथ्वी! मैं जो तुम्हें खोदता हूँ, वह पुनः भर जाय। यह श्लोक पर्यावरणीय पुनर्स्थापन का अद्भुत उदाहरण है। ऋग्वेद में पृथ्वी को स्थिर, पोषक और जीवनदायिनी कहा गया है। **"धर्ता पृथिवी रजसा समुदं रजो विवर्तते"**[5] अर्थात् पृथ्वी ही समुद्र और वातावरण (वायुमण्डल) को धारण करती है और पर्यावरण को सुचारू रूप से चलाती है। इसमें पृथ्वी को देवी के रूप में मानकर प्रकृति के संरक्षण का संकेत दिया गया है।

**वैदिक साहित्य में जल संरक्षण**

वैदिक ग्रन्थों में जल को जीवन के लिए आधारी तत्व माना गया है तथा जल संरक्षण के लिए अत्यन्त जागरूक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। छान्दोग्य उपनिषद में समस्त सृष्टि को जल का स्वरूप माना गया है। **येयं पृथ्वी यदन्तरिक्षं यद्द्यौर्यत्पर्वता यद्देवमनुष्यायतपशवश्च वयासि च तृण वनस्पतयः श्वापदान्याकीटपतंगपिपीलकामपि एवेमा मूर्ता अप उपस्वेति**।[6] ऋग्वेद[7] में ऋषि जल को पवित्र मानकर उसके संरक्षण और प्रदूषण से बचानें की प्रार्थना करता है। **"अपोहिष्ठामयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातनामहे रणाय चक्षसे**।" क्योंकि जल ही जीवन का आधार है। ऋग्वेद के सातवें मण्डल के 49 वें सूक्त के दूसरे मन्त्र में जल की शुद्धता का वर्णन मिलता है इसे अशुद्ध न करने की बात कही गयी है। अर्थववेद में तो इसे औषधि कहा गया है **(आपः सर्व भेषजी.....अथर्ववेद, 1.5.2)**। अथर्ववेद के 12 वें मण्डल के प्रथम सूक्त का 49 वां मन्त्र जल संरक्षण पर बल देता है तथा ईशोपनिषद का प्रथम मन्त्र **("ईशावास्यमिदं.....मा गृधः कस्यस्विद्धनम्")** प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग पर बल देता है जिसमें सीमित उपभोग, त्याग का भाव तथा पारिस्थैतिक संतुलन का भाव समाहित है। तैत्तिरीय उपनिषद, शिक्षावल्ली, प्रथम अनुवाक में वर्णित **ओम् शं नो मित्रः शं वरूणः** मंत्र जल, वायु, और प्रकृति सभी के लिए कल्याणकारी हो, यह पर्यावरण संरक्षण के प्रति व्यापक दृष्टिकोण रखता है। तैत्तरीय संहिता में वर्षा और जल चक्र के संतुलन का वर्णन है **(हिरण्यवर्णा शुचयः 5.6.1)**।

वैदिक ग्रन्थों में पृथ्वी को केवल भौतिक तत्व नहीं बल्कि माता, देवी और जीवनदायिनी शक्ति के रूप में देखा गया है। इन ग्रन्थों का संदेश है कि मानव को उसका सम्मान और संरक्षण करना चाहिए तथा प्रदत्त संसाधनों का संतुलित उपयोग करना चाहिए।

**वनस्पतियों के प्रति दृष्टिकोण**

अथर्ववेद में वनस्पतियों को देवी के रूप में पूजते हुए उन्हें प्रदूषण से बचाने का निर्देश दिया गया है। **"यत् कुसुम्भं यत् पुष्पमं यत् फलं यच्चाफलम्। सं मा विदुः पितृमतीरसृजत् सक्ष्ये मनः"।**[8] अर्थात् वे वनस्पतियां जो पुष्पवती हैं, फलवती हैं और जिनमें विशेष शक्ति है वे हमें रोगों और प्रदूषण से बचाती हैं। इन वनस्पतियों का संरक्षण अनिवार्य है। **"याःपृथिव्यामोषधयः"** [9] अर्थात् पृथ्वी से उत्पन्न सभी वनस्पतियां ओषधीय गुणों के कारण जीवन से जुड़ी हैं। **"ओषधयः सोम राज्ञः"**[10] के माध्यम से बताया गया है कि सभी वनस्पतियों में रस के रूप में ऊर्जा है। यजुर्वेद में तो इन्हें जीवन का आधार माना गया है **"ओषधयः वनस्पतयः"**[11] शुक्ल यजुर्वेद में **"वनस्पतयः शान्तिः"**[12] के माध्यम से पारिस्थैतिक संतुलन का संदेश दिया गया है। ऋग्वेद13 के 10 वें मण्डलके 97 सूक्त में **"वनस्पतयः शं नो भवन्तु"** की बात कही गयी है जिसमें बताया गया है कि वनस्पतियां पृथ्वी से उत्पन्न होकर जीवों के स्वास्थ्य की रक्षा करती हैं। शतपथ ब्राह्मण में तो इन्हें अन्न का स्रोत और जीवन का आधार कहा गया है। अर्थात् वैदिक ग्रन्थों में वनस्पतियों को जैविक पर्यावरण का एक संघटक मानकर इसे नष्ट न करने एवं संरक्षण करने की बात कही गयी है।

**समकालीन प्रासंगिकता**

वैदिक पारिस्थितिक दर्शन आज के समय में तीन स्तरों पर अपना समाधान प्रस्तुत करता है-

| क्रम संख्या | आधुनिक समस्या | वैदिक समाधान | पारिस्थैतिक प्रभाव |
|---|---|---|---|
| 1 | मानव केन्द्रित दृष्टिकोण (Anthropocentrism) प्रकृति को केवल उपभोग की वस्तु मानना | पारिस्थितिकी केन्द्रित दृष्टिकोण (Ecocentrism) प्रकृति को देवी देवता, माता और सजीव मानना | यह दृष्टिकोण शोषण की जगह सरक्षण का भाव पैदा करता है। |
| 2 | अनियन्त्रित उपभोग (Over-consumption) संसाधनों का अत्यधिक दोहन | "तेन त्यक्तेन भुंजीथा" अर्थात् त्याग पूर्वक उपभोग पर बल देना। लालच का निषेध करना। | कार्बन फुटप्रिन्ट कोकम करके सतत जीवन (Sustainable lifestyle) शैली के विकास में सहायक है। |
| 3 | केवल कानूनी / तकनीकी उपाय - जो पूरी तरह से अक्षम हैं। | नैतिक और अध्यात्म कर्तव्य इसमें पर्यावरण की रक्षा को धर्म के साथ जोड़ने पर बल दिया गया है। | आन्तरिक चेतना जागृत होकर नियम पालन के बजाय अन्दर से स्वतः संरक्षण का भाव पैदा करती है। |

स्पष्ट है कि पारम्परिक पर्यावरणवाद मानव केन्द्रित है जिसमें यह माना गया है कि हमें प्रदूषण इसलिए कम करना है ताकि हमें साफ हवा पानी मिल सके और हमारा भविष्य सुरक्षित हो। इसमें प्रकृति को लोगों की जरूरत पूरा करने वाला साधन माना जाता है। लेकिन वर्ष 1973 में नार्वे के दार्शनिक आर्ने नेस[14] ने **डीप इकोलाजी** का सिद्धान्त दिया जो प्रकृति केन्द्रित और प्रकृति के आन्तरिक मूल्य का समर्थन करता है। इसमें यह माना गया है कि धरातल पर विद्यमान सभी जीवों को नदियों, पहाड़ों आदि को धरती पर रहने का उतना ही अधिकार है जितना हमारा। साथ ही प्रकृति की हर वस्तु का अपना मूल्य है चाहे वह हमारे काम आये या न आये, यथा एक चींटी भी पारिस्थैतिक तन्त्र के लिए उतनी ही महत्वपूर्ण है जितना कि मनुष्य। यह जो डीप इकोलाजी की विचारधारा अब समस्या आने पर दी गयी है हमारे वैदिक दर्शन में ऋषियों ने आज से हजारों वर्ष पूर्व ही अपनी जीवन पद्धति और दर्शन को अपना कर लोगों को प्रकृति संरक्षण का संदेश दिया था जिसमें जैव समानता, परस्पर निर्भरता तथा उपभोक्तावाद का विरोध जैसे नैतिक मूल्य शामिल थे। आज आधुनिक वैज्ञानिक विकास हमें बहुत कुछ दिया लेकिन हमारी लालच को नहीं मिटा पाया। लेकिन अगर डीप इकोलाजी और वैदिक दर्शन दोनों मिल जायं तो हमें एक अध्यात्मिक और नैतिक चश्मा मिल जायेगा। इससे मानव समग्र पृथ्वी को अपनी माँ मानने लगेगा अर्थात् **"माताभूमिः पुत्रोऽहंपृथिव्याः"** का भाव आयेगा। यही एक सूत्र वाक्य समूची दुनिया के पूरे पर्यावरण संकट को सुलझाने में सक्षम है।

**निष्कर्ष**

उपर्युक्त अध्ययन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि प्राचीन वांग्मय का पारिस्थितिकीय दर्शन हमें भविष्य में आने वाले संकट से बचने का मार्ग दर्शक है। जहां आधुनिक विज्ञान हमें यह बताता है कि पर्यावरण अवनयन कैसे हो रहा है वहीं वैदिक वांग्मय हमें वह दृष्टि और संस्कार देता है कि हम प्रदूषण करना ही छोड़ दें। अगर हमें संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य को प्राप्त करना है तो तकनीकी ज्ञान के साथ ही वैदिक विचारधारा, जो प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व पर बल देती है, को अपनाना होगा। तभी हम अपनी पृथ्वी को बचा पायेंगे।

**सन्दर्भ ग्रन्थ.**


1. अथर्ववेद, 12.1.12
2. अथर्ववेद,भूमि सूक्त, 12.1.3
3. वही, 12.1.6
4. वही, 12.1.35
5. पूर्व उद्धृत संदर्भ 3,
6. छान्दोग्योपनिषद, 7.10.1
7. ऋग्वेद/अथर्ववेद, 10.9.1
8. अर्थववेद, 8.7.11
9. वही, 8.7.10
10. वही, 5.4.3
11. यजुर्वेद, 12.77
12. शुक्ल यजुर्वेद, 36.11
13. ऋग्वेद, 10.97
14. Naess,A. (1973)%"The Shallow and the deep,Long-Range Ecology Movement : A Summary."Inquiry, 16()1,95-100.



## Cite this Article:

**शुक्ल, डॉ0 श्रवण कुमार., मिश्र, डॉ0 भूपेश कुमार..(2026). वैदिक वांग्मय में पारिस्थितिक-दर्शन: पाठ्य विश्लेषण एवं समकालीन प्रासंगिकता.**The Research Dialogue, 5(2), 360–364., Volume-05, Issue-02, July-2026.
DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.37


This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

**Disclaimer/Publisher's Note:** The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.

# CERTIFICATE

## of Publication

***This Certificate is proudly presented to***

डॉ0 श्रवण कुमार शुक्ल[1], डॉ0 भूपेश कुमार मिश्र[2]

## वैदिक वांग्मय में पारिस्थितिक-दर्शन: पाठ्य विश्लेषण एवं समकालीन प्रासंगिकता

Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-02, Month July, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73/ 6.79)

**Dr. Lohans Kumar Kalyani**
**Editor- In-chief**

**Dr. Neeraj Yadav**
**Executive-In-Chief- Editor**

**Note:** This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/
**DOI :** https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.37